

Help stop Gadhimai mass animal sacrifice in Nepal

by Rajeev Sethi

Soon after the 2009 Gadhimai Mela (fair) ended, animal activists began heightening awareness to stop/reduce mass animal sacrifices at the next one scheduled to be held later this year. November 25th and 26th may be the main dates. The Gadhimai Mela is held every five years.

BWC has vowed to do all it can to stop/reduce the carnage, and has begun working for it in India and Nepal.

The Gadhimai Mela is held in Bariyarpur, Bara District, South Nepal, where about two to five lakhs of animals, mainly young buffaloes, are sacrificed. The others beheaded are goats, ducks, roosters, pigeons, and rats. Hundreds of slaughterers, equipped with swords, are employed to slay the animals in a barbaric and painful manner.

Seventy percent of the visitors to the fair are from the Terai regions of Bihar, Uttarakhand, Uttar Pradesh and West Bengal. Consequently, in 2009, Beauty Without Cruelty approached the Union Minister of Home Affairs to stop the movement of animals across the Indo-Nepali border. BWC estimates

that fifty percent of animals scheduled to be beheaded were saved with the help extended by the Government of India.

Beauty Without Cruelty and Animal Welfare Network Nepal worked together.

The Wrath of Gadhimai written by a foreigner who attended the festival in 2009 can be viewed at www.travelyourasoff.com/2011/12/wrath-of-gadhimai-gadhimai-festival.html. The pictures alongside have been taken from this link.

Mass massacre

At midnight on the main night, people gather round a small idol of the Goddess Gadhimai placed below a *pipal* tree, while the chief priest begins



Getting ready for the kill. Photo courtesy: travelyourasoff.com.

chanting; he anoints the idol with *kumkum* and flowers. Since this is not enough to awaken the Goddess, a person offers blood from five parts of his body. This is believed to hasten the Goddess's awakening.

Everyone is tense for the rest of the night, frequently looking into a big earthen jar, awaiting a light to appear in it spontaneously, indicating the Goddess has awoken.



The last fearful lick of loving sympathy. Photo courtesy: travelyourasoff.com.



The killing field. Photo courtesy: travelyourassoff.com.



Beheading a calf. Photo courtesy: travelyourassoff.com.

Possessed by the spirit of the Goddess, a priestess begins to shudder and shake.

Three hundred to four hundred men pick up swords and walk towards an adjoining

field where thousands of animals, particularly young male buffalo calves, are kept imprisoned. Forty-eight hours of gruesome, bloody beheading of animals, the largest single animal sacrifice on earth, follows.

This bloodthirsty event is said to date back about 260 years, when Bhagwan Chaudhary, a feudal landlord imprisoned in Makwanpur Fort, dreamt that his problems would be solved if he made a blood sacrifice to the Goddess Gadhimai. On being released, he approached a village healer whose descendant, Dukha Kachadiya, started the ritual with drops of his own blood from five parts of his body. This was followed by the sacrifice of five animals.

We request you to help

If readers have contacts likely to help eliminate or at least lessen the mass animal sacrifices in any way – like religious leaders, politicians, historians, bureaucrats, TV/press journalists, famous Hindi film/TV stars, Bhojpuri artistes or any other influential persons in Nepal or India – we request them to please get in touch with us via e-mail at chairperson@bwcindia.org or post.

BWC will be grateful for all help.



Rajeev Sethi is a BWC trustee.

गधिमाई-नेपाल में पशुओं की सामूहिक बलि को रोकें

मेले के मुलाकातियों में से ७०% बिहार, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश व पश्चिम बंगाल के तराई क्षेत्र से आते हैं, ऐसा कहते हैं राजीव सेठी

२००९ के गधिमाई मेले के संपन्न होने पर तुरंत ही पशु सक्रियतावादियों ने इस वर्ष के अंत भाग में होने वाले अगले मेले में पशुओं की बलि को रोकने/कम करने के लिए सजगता बढ़ाना आरम्भ कर दिया। इसकी प्रमुख तिथि २८ व २९ नवंबर होगी। गधिमाई मेला पांच वर्ष के अंतराल पर आयोजित होता है।

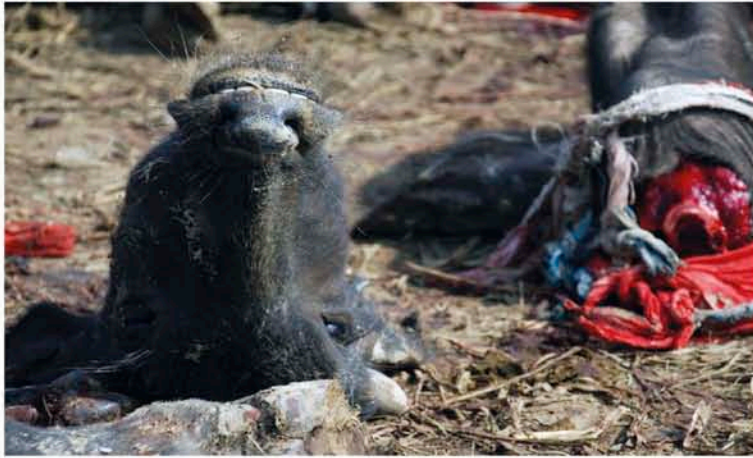
बीडब्ल्यूसी ने शपथ ली है कि वह इस पशु-वध को रोकने/कम करने के हर सम्भव प्रयास करेगी। उसने अब तक यह कार्य भारत व नेपाल में आरम्भ कर दिया है।

दक्षिण नेपाल के बारा जिले के बरियारपुर में गधिमाई मेला लगता है, जहाँ पर तक्रीबन दो से पांच लाख तक पशुओं का क़त्ल किया जाता है। इन में प्रमुखतया नर भैंसे अधिक मारे जाते हैं। वध किये जाने वाले अन्य पशुओं में बकरी, बत्तख, मुर्गे, कपोत, और चूहे तक होते हैं। खड्ग से सज्ज सैकड़ों वधिक पशुओं को क्रूरतापूर्ण और दर्दनाक तरीके से मारने के लिए काम पर लगाए जाते हैं।



गधिमाई के मैदानों में निर्दोष प्राणियों का नृशंस और खूंखार क़त्ल।

तसवीर सौजन्य: travelyourassoff.com



हज़ारों भैंसों का वध करने के लिये प्रयुक्त सैकड़ों वधिकाओं में से एक के हाथ में लहराता खड्ग।

तसवीर सौजन्य: travelyourassoff.com

मेले के मुलाकातियों में से ७० % बिहार, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश व पश्चिम बंगाल के तराई क्षेत्र से आते हैं। इसी कारण से ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी ने २००९ में केंद्रीय गृह मंत्री से भारत-नेपाल सीमा पर पशुओं के आवागमन पर रोक लगाने कि गुज़ारिश की थी। बीडब्ल्यूसी का अनुमान है कि भारत सरकार की सहायता के फलस्वरूप मारने के लिए नियत पशुओं की संख्या में ५०% कमी आयी। इस मुहिम को ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी एवं एनिमल वेलफेयर नेटवर्क नेपाल ने संयुक्त रूप से अंजाम दिया।


२००९ में इस मेले को स्वयं देखने के बाद एक विदेशी ने *The Wrath of Gadhimai* नामक ब्यूरी लिखा, जिसे www.travelyourassoff.com/2011/12/wrath-of-gadhimai-gadhimai-festival.html वेबसाइट पर देखा जा सकता है। इस लेख की तसवीरें उसी वेबसाइट से ली गई हैं।

समूह हत्या

मेले के मुख्य दिन को मध्यरात्रि में पीपल के पेड़ के नीचे स्थित देवी गधिमाई की प्रतिमा के इर्दगिर्द लोग इकट्ठा होते हैं, मुख्य पुजारी मंत्रोच्चारण प्रारम्भ करता है, देवी की प्रतिमा पर कुमकुम एवं पुष्पवृष्टि करता है। देवी को जगाने के लिए इतना पर्याप्त नहीं होता है, अतः एक व्यक्ति अपने शरीर के पांच हिस्सों से खून निकाल कर चढ़ाता है। यह सब देवी का शीघ्र आह्वान करने के लिए किया जाता है। शेष रात्रि के दौरान प्रत्येक व्यक्ति तनावपूर्ण रहता है। बार बार मिटटी के बड़े मर्तबान में झांकता रहता है और उसमे

से स्वयंभू प्रकाश दिखने की प्रतीक्षा करता है, जोकि देवी के जागने का संकेत देता है। देवी की आत्मा से ग्रस्त एक पुजारिन हिलना व कांपना शुरू करती है।

तीन सौ से चार सौ पुरुष हाथ में खड्ग उठा लेते हैं, और पास के मैदान में, जहाँ हज़ारों पशु हैं, खास कर कटड़े बंदी हैं, वहाँ जाते हैं। और उसके बाद शुरू होता है, पृथ्वी पर सबसे बड़ा पशुओं का नृशंस और खूखवार हत्याकांड, जो पूरे अड़तालीस घंटों तक लगातार चलता रहता है। रक्तपिपासु यह घटनाक्रम लगभग २६० वर्षों पूर्व शुरू हुआ था, जब भगवान चौधरी नामक सामंती जागीरदार को मकवानपुर किले में कैद किया गया था, उसने सपने में देखा कि उसकी समस्या का समाधान हो सकता है, यदि वह देवी गधिमाई को खून चढ़ाये। कारागार से मुक्त होते ही वह गाँव के ओझा के पास गया। उसके वंशज दुखा काछडिया ने अपने शरीर के पांच भाग से खून निकाल कर रक्तभिषेक करते हुए इस क्रियाकाण्ड का प्रारम्भ किया था। इस के बाद पांच पशुओं का बलि दिया जाने लगा।

 **राजीव सेठी**
बीडब्ल्यूसी के ट्रस्टी हैं।

हम आप से इस सहायता के लिए गुहार लगाते हैं

यदि पाठक गण का संपर्क धार्मिक नेताओं से, राजद्वारियों से, इतिहासकारों से, प्रशासकों से, टीवी/प्रेस पत्रकारों से, ख्यातनाम हिंदी फिल्म/टीवी कलाकारों से, भोजपुरी कलाकारों से या नेपाल/भारत में अन्य प्रभावकारी व्यक्तियों से है तो हमारा आग्रह है कि आप उनके माध्यम से इस हत्याकांड को रोकने या कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाएँ। आप हम से ई-मेल के माध्यम से chairperson@bwcindia.org अथवा पत्र के द्वारा संपर्क कर सकते हैं।

करुणा-मिर्

We request you to help

If readers have contacts likely to help eliminate or at least lessen the mass animal sacrifices in any way – like religious leaders, politicians, historians, bureaucrats, TV/press journalists, famous Hindi film/TV stars, Bhojpuri artistes or any other influential persons in Nepal or India – we request them to please get in touch with us via e-mail at *chairperson@bwcindia.org* or post.

BWC will be grateful for all help.



Beauty Without Cruelty

An International Educational Charitable Trust for Animal Rights

4 Prince of Wales Drive Wanowrie Pune 411040 India

Tel: +91 20 2686 1166 Fax: +91 20 26861420

Email: admin@bwcindia.org Website: www.bwcindia.org